



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	8-3-24	2	3-6

The Tribune

Patent for HAU to synthesise silver nanoparticles using liquorice

TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, MARCH 7

Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University has been granted a patent by the Indian Patent Office for the improved method of synthesising silver nanoparticles using liquorice (mulethi variety HM-1).

Vice-Chancellor Prof BR Kamboj said the silver nanoparticles would be effective in controlling nematodes, adding that the infestation of root-knot nematodes caused losses to the polyhouse, greenhouse, horticultural and vegetable crops.

"Due to the controlled environmental conditions in the polyhouse, there is a huge increase in the nematode population. Thus, farmers have to suffer huge financial losses. Therefore, we tested these silver nanoparticles produced by liquorice for their nematocidal potential on the root-knot nematodes," he said.

This study was conducted with the help of Prakash Banakar, Assistant Scientist at Department of Nematology. First, the research scholars did this investigation in the lab and then in the screen house.

In both cases, silver nanoparticles produced using liquorice were found capable of killing root-knot nematodes.

Further research work is



HAU Vice-Chancellor Prof BR Kamboj with members of the patent team in Hisar. TRIBUNE PHOTO

in progress.

Prof Kamboj said in comparison to the commercial chemical nematicides, only a very small amount of these silver nanoparticles was found to be sufficient as a nematicide.

These silver nanoparticles might be used for various agricultural crops, he said, adding that the methodology of green synthesis of silver nanoparticles invented by the university was effective, economical and stable.

This method was developed by PhD scholars Kani-ka Rani and Nisha Devi,

under the guidance of Pushpa Kharb — former Head of Department of Molecular Biology, Biotechnology and Bioinformatics of the university.

This method has been granted a patent under the Patent Act, 1970, with No. 486872 for a period of 20 years.

College of Basic Sciences and Humanities dean Neeraj Kumar said this patent was for a better method of synthesis of silver nanoparticles using the root extract of liquorice (variety HM-1).

These silver nanoparticles

have been found to be stable for more than a year. The nematocidal efficacy of these nanoparticles was also examined in in-vitro and in-vivo conditions.

"The process of synthesising silver nanoparticles from plants uses fewer chemicals and produces no additional toxic residues. Farmers can use the silver nanoparticles produced from liquorice root extract to control the nematode-infestation, which causes serious damage to the yield and quality of almost all cultivated crops," he added.



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्पुचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	8.2.24		

हकृवि में कृषि अधिकारियों की दो दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ

कम लागत पर अधिक से अधिक लाभ किसानों को पहुंचाएं : प्रो. काम्बोज

■ प्रदेशभर से कृषि अधिकारी करेंगे मंथन,
खरीफ फसलों के लिए की जाएगी सिफारिशें

हरिभूमि न्यूज | हिंसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा है कि विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित की गई फसलों की सिफारिश के अलावा प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में फसल उत्पादन में अलग-अलग तरह से काश्तकारी की जा रही है। इसके कारण अनुमोदित सिफारिश की पैदावार के मुकाबले किसानों की पैदावार में अंतर आ जाता है। उन्होंने कृषि अधिकारियों से आह्वान किया कि फसल उत्पादन की समग्र सिफारिशों को पूर्ण रूप से लागू करवाकर पैदावार के इस अंतर को कम करके, कम लागत पर अधिक से अधिक लाभ किसानों को पहुंचाएं।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज बृहस्पतिवार को एचएयू में शुरू हुई दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) 2024 के शुभारंभ अवसर पर संबोधन दे रहे थे। विस्तार शिक्षा निदेशालय की ओर से आयोजित कार्यशाला में



हिंसार। कृषि अधिकारी व वैज्ञानिकों को संबोधित करते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज।

फोटो: हरिभूमि

विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारी व विस्तार शिक्षा विशेषज्ञों ने भाग लिया। कुलपति ने बताया कि इस कार्यशाला से विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई नवीनतम किस्मों व कृषि पद्धतियों को जल्दी से जल्दी से किसानों तक पहुंचाने में मदद मिलेगी, जिससे कि फसलों की पैदावार बढ़ेगी। उन्होंने वर्तमान समय में कृषि क्षेत्र में

आ रही चुनौतियों जैसे भू-जल के स्तर का गिरना, भूमि की उर्वरा शक्ति में कमी आना, भूमि की लवणता, क्षारीयता व जल भराव की स्थिति, जलवायु परिवर्तन, फसल विविधिकरण तथा फसल उत्पादन में कीटनाशक एवं रसायनिक उर्वरकों का अधिक प्रयोग शामिल है।

उन्होंने जमीनी स्तर पर किसानों के संपर्क में कार्य कर रहे कृषि अधिकारियों के

फीडबैक से विश्वविद्यालय में चल रहे शोध कार्य को और अधिक तीव्रता से व केंद्रित करके इन समस्याओं का उचित समाधान जल्दी मिल सकेगा।

उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने कृषक समुदाय के उत्थान के लिए हर गांव से 30 किसानों का डाटा एकत्रित कर उसे सीएससी सेंटर से जोड़ा है ताकि कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा कृषि क्षेत्र से जुड़ी दुरुस्त जानकारियां, नवाचारों, प्रौद्योगिकियों व नई तकनीकों को आसानी से किसानों तक पहुंचाया जा सके।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त कृषि निदेशक (सांख्यिकी) डॉ. आरएस सोलंकी ने कृषि विभाग की ओर से खरीफ फसलों के लिए तैयार की गई विस्तृत रणनीति की जानकारी दी। विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने सभी का स्वागत कर कार्यशाला की विस्तृत जानकारी दी।

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने विश्वविद्यालय द्वारा किए गए शोध कार्यों की रिपोर्ट पेश की। मंच संचालन डॉ. सुनील ढांडा ने किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उजियत समाचार 2	8.3.24	5	1-5

कार्यशाला से विश्वविद्यालय की नवीनतम किस्मों व कृषि पद्धतियों को जल्दी से जल्दी किसानों तक पहुंचाने में मदद मिलेगी : प्रो. काम्बोज

हिसार, 7 मार्च (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में आज से दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) 2024 का शुभारंभ हुआ। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बतौर मुख्यातिथि कार्यशाला का उद्घाटन किया। विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित कार्यशाला में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारी व विस्तार शिक्षा विशेषज्ञों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित की गई फसलों की सिफारिश के अलावा प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में फसल उत्पादन में अलग-अलग तरह से कारगरि की जा रही है, जिसके कारण अनुमोदित सिफारिश की पैदावार के मुकाबले किसानों की पैदावार में अंतर आ जाता है। उन्होंने कृषि अधिकारियों से आह्वान किया कि

फसल उत्पादन की समग्र सिफारिशों को पूर्ण रूप से लागू करवाकर पैदावार के इस अंतर को कम करके, कम लागत पर अधिक से अधिक लाभ किसानों को पहुंचाए। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला से विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई नवीनतम किस्मों व कृषि पद्धतियों को जल्दी से जल्दी से किसानों तक पहुंचाने में मदद मिलेगी, जिससे कि फसलों की पैदावार बढ़ेगी। मुख्यातिथि ने वर्तमान समय में कृषि क्षेत्र में आ रही चुनौतियों जैसे भू-जल के स्तर का गिरना, भूमि की उर्वरा शक्ति में कमी आना, भूमि की लवणता, क्षारीयता व जल भराव की स्थिति, जलवायु परिवर्तन, फसल विविधिकरण तथा फसल उत्पादन में कीटनाशक एवं रसायनिक उर्वरकों का अधिक प्रयोग शामिल है। मुख्यातिथि ने जमीनी स्तर पर किसानों के संपर्क में कार्य कर रहे कृषि अधिकारियों के फीडबैक से विश्वविद्यालय में चल रहे शोध कार्य को और अधिक तीव्रता से व केंद्रित करके इन समस्याओं का उचित समाधान

जल्दी मिल सकेगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने कृषक समुदाय के उत्थान के लिए हर गांव से 30 किसानों का डाटा एकत्रित कर उसे सीएससी सेंटर से जोड़ा है ताकि कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा कृषि क्षेत्र से जुड़ी दुरुस्त जानकारी, नवाचारों, प्रौद्योगिकियों व नई तकनीकों को आसानी से किसानों तक पहुंचाया जा सके। मुख्यातिथि ने कहा कि किसानों तक पहुंचने वाली जानकारी एक समान होनी चाहिए। इसके लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों व कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों को एक मंच पर आकर एकजुट होकर मंथन करने की आवश्यकता है। मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि किसानों के उत्थान के लिए विश्वविद्यालय ने बीते तीन वर्षों में विभिन्न फसलों की 44 किस्में विकसित की हैं लेकिन इन किस्मों को किसानों तक पहुंचाना अहम चुनौती है। इसके लिए विश्वविद्यालय ने कई निजी कंपनियों के साथ समझौते किए हैं ताकि किसानों तक

विश्वविद्यालय द्वारा इजाद की गई फसलों की उन्नत किस्मों को जल्दी से जल्दी पहुंचाया जा सके। मुख्यातिथि ने उपस्थित वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे फिल्ड में जाकर किसानों से फीडबैक जरूर लें। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने ओपन डाटा कन्टेंट एप्लीकेशन भी बनाई है, जिसमें 300 कृषक परिवारों का डाटा जोड़ा है ताकि हमें पता लग सके कि किसानों की जरूरतें, आवश्यकताएं, मांग, सुविधाएं क्या-क्या हैं। साथ ही हमें जल संरक्षण, प्राकृतिक खेती और साइलेज मेकिंग की दिशा में आगे बढ़ने की आवश्यकता है। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के अतिरिक्त कृषि निदेशक (सांख्यिकी) डॉ. आर.एस. सोलंकी ने कृषि विभाग की ओर से खरीफ फसलों के लिए तैयार की गई विस्तृत रणनीति की जानकारी दी। विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने सभी का स्वागत कर कार्यशाला की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने

निदेशालय द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न विस्तार गतिविधियों के बारे में अवगत कराया। साथ ही उन्होंने विभिन्न फसलों की नई किस्मों की जानकारी देते हुए मौजूदा समय में चल रहे अनुसंधान कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहूजा ने विश्वविद्यालय द्वारा किए गए शोध कार्यों की रिपोर्ट पेश की। मंच संचालन डॉ. सुनील ढांडा ने किया। इस कार्यशाला के दौरान प्रदेश के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के सभी जिलों के कृषि उपनिदेशक, कृषि विज्ञान केंद्रों के समन्वयक व विश्वविद्यालय के विभिन्न कॉलेजों के अधिष्ठाता, निदेशक एवं विभागाध्यक्षों ने खरीफ फसलों की समग्र सिफारिशों के लिए अपने 6विचार रखे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	8.3.24	2	1-4

दैनिक भास्कर

भास्कर खास • खरीफ को लेकर 2 दिवसीय कार्यशाला शुभारंभ, प्रदेशभर के कृषि अधिकारी कर रहे मंथन
एचएयू ने 3 साल में फसलों की 41 किस्में की विकसित, नई तकनीक के लिए हर गांव से 30 किसान जोड़े: काम्बोज

भास्कर न्यूज़ | हिंसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने तीन वर्षों में विभिन्न फसलों की 41 किस्में विकसित की हैं। इन किस्मों को विश्वविद्यालय ने कई निजी कंपनियों के साथ समझौते किए हैं, ताकि किसानों तक विश्वविद्यालय द्वारा इजाद की गई फसलों की उन्नत किस्मों को जल्दी पहुंचाया जा सके। एचएयू के कृषि महाविद्यालय में गुरुवार से दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला खरीफ-2024 के शुभारंभ अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कार्यशाला में यह बात कही। उन्होंने कहा कि कृषक समुदाय के उत्थान के लिए हर गांव से 30 किसानों का डेटा एकत्रित कर उसे सीएससी सेंटर से जोड़ा है, ताकि



अधिकारियों की वर्कशॉप में उपस्थित कुलपति बीआर काम्बोज व अन्य।

कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा कृषि क्षेत्र से जुड़ी दुरुस्त जानकारियां, नवाचारों, प्रौद्योगिकियों व नई तकनीकों को आसानी से किसानों तक पहुंचाया जा सके। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने ओपन डेटा कंटेंट एप्लीकेशन भी बनाई है, जिसमें 300 कृषक परिवारों का डेटा जोड़ा है, ताकि हमें पता लग सके कि किसानों की जरूरतें, आवश्यकताएं, मांग, सुविधाएं क्या-क्या हैं। साथ ही हमें जल

संरक्षण, प्राकृतिक खेती और साइलेज मैकिंग की दिशा में आगे बढ़ने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित की गई फसलों की सिफारिश के अलावा प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में फसल उत्पादन में अलग-अलग तरह से कारगर की जा रही है। इसके कारण अनुमोदित सिफारिश की पैदावार के मुकाबले किसानों की पैदावार में अंतर आ जाता है।

खरीफ फसलों के लिए तैयार की रणनीति की साझा

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के अतिरिक्त कृषि निदेशक सांख्यिकी डॉ. आरएस सोलंकी ने कृषि विभाग की ओर से खरीफ फसलों के लिए तैयार की रणनीति की जानकारी दी। विवि के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने विभिन्न फसलों की नई किस्मों की जानकारी देते हुए मौजूदा समय में चल रहे अनुसंधान कार्यों के बारे में बताया। इस दौरान प्रदेश के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के सभी जिलों के कृषि उपनिदेशक, कृषि विज्ञान केंद्रों के समन्वयक व विश्वविद्यालय के कॉलेजों के अधिष्ठाता, निदेशक एवं विभागाध्यक्षों ने खरीफ फसलों की सिफारिशों के लिए विचार रखे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पजाब केसरी	8.3.24	2	1-2



मंच पर मौजूद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज व अन्य अधिकारीगण।

कार्यशाला से नवीनतम किस्मों व कृषि पद्धतियों को किसानों तक पहुंचाने में मिलेगी मदद : प्रो. काम्बोज

हिसार, 7 मार्च (राठी): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में 2 दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) 2024 का शुभारंभ हुआ। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बतौर मुख्यातिथि कार्यशाला का उद्घाटन किया। विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित कार्यशाला में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारी व विस्तार शिक्षा विशेषज्ञों ने भाग लिया।

मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कृषि अधिकारियों से आह्वान किया कि फसल उत्पादन की समग्र सिफारिशों को पूर्ण रूप से लागू करवाकर पैदावार के इस अंतर को कम करके, कम लागत पर अधिक से अधिक लाभ किसानों को पहुंचाए। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला से विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई नवीनतम किस्मों व कृषि पद्धतियों

को जल्दी से जल्दी से किसानों तक पहुंचाने में मदद मिलेगी।

मुख्यातिथि ने वर्तमान समय में कृषि क्षेत्र में आ रही चुनौतियों जैसे भू-जल के स्तर का गिरना, भूमि की ऊर्वरा शक्ति में कमी आना, भूमि की लवणता, क्षारीयता व जल भराव की स्थिति, जलवायु परिवर्तन, फसल विविधकरण तथा फसल उत्पादन में कीटनाशक एवं रसायनिक ऊर्वरकों का अधिक प्रयोग शामिल है।

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहूजा ने विश्वविद्यालय द्वारा किए गए शोध कार्यों की रिपोर्ट पेश की। मंच संचालन डॉ. सुनील ढांडा ने किया। इस कार्यशाला के दौरान प्रदेश के कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के सभी जिलों के कृषि उपनिदेशक, कृषि विज्ञान केंद्रों के समन्वयक व विश्वविद्यालय के विभिन्न कॉलेजों के अधिष्ठाता, निदेशक एवं विभागाध्यक्षों ने खरीफ, फसलों की समग्र सिफारिशों के लिए अपने विचार रखे।

» कृषि अधिकारियों की 2 दिवसीय कार्यशाला शुरू



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
डामर डजाला	8.3.24	2	4

नवीनतम किस्मों को किसानों तक पहुंचाने से बढ़ेगी फसलों की पैदावार

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के कृषि महाविद्यालय में दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) 2024 का शुभारंभ हुआ। कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि अगर नवीनतम किस्मों और कृषि पद्धतियों को जल्द से जल्द किसानों तक पहुंचाने से फसलों की पैदावार बढ़ेगी।

विवि ने कृषक समुदाय के उत्थान के लिए हर गांव से 30 किसानों का डाटा एकत्रित कर उसे सीएससी से जोड़ा है, कृषि क्षेत्र से जुड़ी जानकारियां किसानों तक पहुंच सके। संवाद



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	07.03.2024	--	--

दो दिवसीय कार्यशाला (खरीफ) का शुभारंभ, प्रदेश भर से कृषि अधिकारी करेंगे मंथन

सिटी पल्स न्यूज, हिंसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में आज से दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) 2024 का शुभारंभ हुआ। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बतौर मुख्यातिथि कार्यशाला का उद्घाटन किया। विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित कार्यशाला में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारी व विस्तार शिक्षा विशेषज्ञों ने भाग लिया।

मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा अनुसंधान की गई फसलों की सिफारिश के अलावा प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में फसल उत्पादन में अलग-अलग तरह से कारगर तरीके की जा रही हैं, जिसके कारण अनुसंधान सिफारिश की पैदावार के मुकाबले किसानों की पैदावार में अंतर आ जाता है। उन्होंने कृषि अधिकारियों से आग्रह किया कि फसल उत्पादन की समग्र सिफारिशों को पूर्ण रूप से लागू करके पैदावार के इस अंतर को कम करके, कम लागत पर अधिक से अधिक लाभ किसानों को पहुंचाएं। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला से विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई नवीनतम किस्मों



व कृषि पद्धतियों को जल्दी से जल्दी से किसानों तक पहुंचाने में मदद मिलेगी, जिससे कि फसलों की पैदावार बढ़ेगी। मुख्यातिथि ने वर्तमान समय में कृषि क्षेत्र में आ रही चुनौतियों जैसे भू-जल के स्तर का गिरना, भूमि की उर्वर शक्ति में कमी आना, भूमि की लवणता, क्षारीयता व जल भराव की स्थिति, जनवायु परिवर्तन, फसल विविधिकरण तथा फसल उत्पादन में कीटनाशक एवं रासायनिक उर्वरकों का अधिक प्रयोग शामिल है। मुख्यातिथि ने जमीनी स्तर पर किसानों के संपर्क में कार्य कर रहे कृषि अधिकारियों के फीडबैक से विश्वविद्यालय में चल रहे शोध कार्य को और अधिक तीव्रता से व केंद्रित करके इन समस्याओं का उचित समाधान जल्दी मिल सकेगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने कृषक समुदाय के उत्थान के लिए हर गांव

से 30 किस्मों का डाटा एकत्रित कर उसे सीएससी सेंटर में जोड़ है ताकि कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा कृषि क्षेत्र से जुड़े दूरस्थ जानकारियां, नवाचारों, प्रौद्योगिकियों व नई तकनीकों को आमना में किसानों तक पहुंचाया जा सके। मुख्यातिथि ने कहा कि किसानों तक पहुंचने वाली जानकारियां एक सम्मान होनी चाहिए। इसके लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों व कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों को एक मंच पर आकर एकजुट होकर मंथन करने की आवश्यकता है। किसानों की जरूरतों को पूरा करने के लिए विश्वविद्यालय कर रहे निजी कंपनियों से समझौते मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि किसानों के उत्थान के लिए विश्वविद्यालय ने बीते तीन वर्षों में विभिन्न फसलों की 44 किस्में विकसित की है लेकिन इन किस्मों

को किसानों तक पहुंचाना अहम चुनौती है। इसके लिए विश्वविद्यालय ने कई निजी कंपनियों के साथ समझौते किए हैं ताकि किसानों तक विश्वविद्यालय द्वारा इनोवेट की गई फसलों की उन्नत किस्मों को जल्दी से जल्दी पहुंचाया जा सके। मुख्यातिथि ने उपस्थित वैज्ञानिकों से आग्रह किया कि वे फिजलड में जाकर किसानों से फीडबैक जरूर लें। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने अपना डाटा कन्टेंट एप्लीकेशन भी बनाई है, जिसमें 300 कृषक परिवारों का डाटा जोड़ है ताकि हमें पता लग सके कि किसानों की जरूरतें, आवश्यकताएं, मांग, सुविधाएं क्या-क्या हैं। साथ ही हमें जल संरक्षण, प्रकृतिक खेती और सस्टेनैबल मैकेनिंग की दिशा में आगे बढ़ने की आवश्यकता है।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के अतिरिक्त कृषि निदेशक (संश्लेषक) डॉ. आर.एस. खेतकी ने कृषि विभाग की ओर से खरीफ फसलों के लिए तैयार की गई विस्तृत रणनीति की जानकारी दी। विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने सभी का स्वागत कर कार्यशाला की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने निदेशालय द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न विस्तार गतिविधियों के बारे में अवगत कराया।



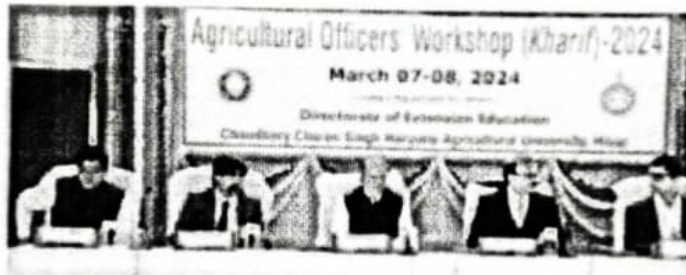
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स न्यूज	07.03.2024	--	--

कार्यशाला से विश्वविद्यालय की नवीनतम किस्मों व कृषि पद्धतियों को जल्दी से जल्दी किसानों तक पहुंचाने में मदद मिलेगी : प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार (चिराग टाइम्स)

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में आज से दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) 2024 का शुभारंभ हुआ। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बतौर मुख्यातिथि कार्यशाला का उद्घाटन किया। विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित कार्यशाला में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारी व विस्तार शिक्षा विशेषज्ञों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित की गई फसलों की सिफरिश के अलावा प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में फसल उत्पादन में अलग-अलग तरह से काश्तकारी की जा रही है,



जिसके कारण अनुमोदित सिफरिश की पैदावार के मुकाबले किसानों की पैदावार में अंतर आ जाता है। उन्होंने कृषि अधिकारियों से आह्वान किया कि फसल उत्पादन को समग्र सिफरिशों को पूर्ण रूप से लागू करवाकर पैदावार के इस अंतर को कम करके, कम लागत पर अधिक से अधिक लाभ किसानों को पहुंचाए। उन्होंने बताया कि इस कार्यशाला से विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई नवीनतम किस्मों व कृषि पद्धतियों को जल्दी से जल्दी से किसानों तक पहुंचाने में मदद मिलेगी, जिससे

कि फसलों की पैदावार बढ़ेगी। मुख्यातिथि ने वर्तमान समय में कृषि क्षेत्र में आ रही चुनौतियों जैसे भू-जल के स्तर का गिरना, भूमि की उर्वरा शक्ति में कमी आना, भूमि की लवणता, क्षारीयता व जल भराव की स्थिति, जलवायु परिवर्तन, फसल विविधिकरण तथा फसल उत्पादन में कीटनाशक एवं रसायनिक उर्वरकों का अधिक प्रयोग शामिल है। मुख्यातिथि ने जमीनी स्तर पर किसानों के संपर्क में कार्य कर रहे कृषि अधिकारियों के फीडबैक से विश्वविद्यालय में चल रहे शोध कार्य को और

अधिक तीव्रता से व केंद्रित करके इन समस्याओं का उचित समाधान जल्दी मिल सकेगा।

उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने कृषक समुदाय के उत्थान के लिए हर गांव से 30 किस्मों का डाटा एकत्रित कर उसे सीएससी सेंटर से जोड़ा है ताकि कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा कृषि क्षेत्र से जुड़ी दुरुस्त जानकारियां, नवाचारों, प्रौद्योगिकियों व नई तकनीकों को आसानी से किसानों तक पहुंचाया जा सकें। मुख्यातिथि ने कहा कि किसानों तक पहुंचाने वाली जानकारियां एक समान होनी चाहिए। इसके लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों व कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों को एक मंच पर आकर एकजुट होकर मंथन करने की आवश्यकता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष न्यूज	07.03.2024	--	--

निमेटोड को नियन्त्रण करने में कारगर साबित होंगे सिल्वर नैनोकण: प्रो. काम्बोज

हड़बि को मुलेठी के सिल्वर नैनोकणों को बनाने की विधि पर मिला पेटेंट

पाठक पक्ष न्यूज

हिसार, 7 मार्च : चौधरी चरण

सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय को मुलेठी (वेबपट्टी एचएम-1) का उपयोग करके सिल्वर नैनोकण बनाने की विधि पर भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा पेटेंट प्रदान किया गया है। इस विधि को विश्वविद्यालय के आर्थिक जैव विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और जैव मूल्य विज्ञान विभाग (एम बी बी एंड सी) की पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. पुष्पा खन्ना के नेतृत्व में उनके पोस्ट-डॉक्टोरल शोधार्थियों डॉ. कनिष्क राने और डॉ. निख देवी ने विकसित किया है। इस विधि को पेटेंट अक्टूबर 1970 के अंतर्गत 20 वर्ष की अवधि के लिए 466872 संख्या में पेटेंट अनुदान किया गया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए कहा कि प्रोफेसर अरुण शोषण, बलरानी व सहयोगियों ने रूट नॉट निमेटोड (जड़-खंड



मूत्रकृमि) के संक्रमण से बहुत अधिक नुकसान देखा गया है। एशिया-पैसिफिक में निर्मित परासिप्रायोरॉल परिसंस्थितियों के कारण निमेटोड की आवृत्ति में वृद्धि हो चुकी है और इनकी अत्यधिक संक्रमण दर के कारण कोई फसल नहीं उगा पाते हैं। जिसकी वजह से किसानों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। इसलिए हमने मुलेठी द्वारा निर्मित इन सिल्वर नैनोकणों को रूट नॉट निमेटोड पर टेस्ट किया। इस कार्य के लिए मूत्रकृमि विभाग के वैज्ञानिक डॉ. प्रकाश बान्कर का सहयोग लिया गया। शोधार्थियों ने यह ज्ञान पहले

जैव में फिर स्क्रीन हाइड्रम में की, दोनों ही केस में मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकण रूट नॉट निमेटोड को मारने में सक्षम पाए गए, इनमें संबंधित और शोध कार्य जारी है।

प्रो. काम्बोज ने बताया कि कामर्सिपल कैमिकल नेमैटिसाइड (बाणिज्यिक रासायनिक मूत्रकृमिनाशक) की तुलना में मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकणों को बहुत कम मात्रा ही मूत्रकृमिनाशक के रूप में प्रयास पाई गई। इसलिए इन सिल्वर नैनोकणों को विभिन्न कृषि फसलों के लिए उपयोग किया जा सकता है। विश्वविद्यालय द्वारा इनके

यह सिल्वर नैनोकण एक साल से अधिक समय तक स्थिर पाए गए हैं

विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अध्यापक डॉ. नीरज कुमार ने कहा कि यह पेटेंट मुलेठी (वेबपट्टी एचएम-1) के मूल अर्क का उपयोग करके उसे सिल्वर नैनोकणों में परिवर्तित करने की बेहतर विधि है। यह सिल्वर नैनोकण एक साल से अधिक समय तक स्थिर पाए गए हैं। इन नैनोकणों में नेमैटिसाइड (मूत्रकृमिनाशक) क्षमता की जांच इन विट्रो व इन विवो स्थितियों में भी की गई थी।

मुलेठी द्वारा निर्मित सिल्वर नैनोकणों के फायदे

पौधों के इस्तेमाल में नैनोकणों को बनाने की विधि में कैमिकल का कम उपयोग होता है और कोई अतिरिक्त जहरीला अवशेष भी नहीं बनता है। मुलेठी के इस्तेमाल से बनने वाले सिल्वर नैनोकण निमेटोड की मारने में सक्षम पाए गए हैं। किसान मुलेठी आधारित इन सिल्वर नैनोकणों का उपयोग निमेटोड संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए कर सकते हैं, जिसकी वजह से लगभग सभी खेती वाली फसलों की उपज और गुणवत्ता को गंभीर नुकसान पहुंचता है।

की गई सिल्वर नैनोकण बनाने की यह विधि प्रभावी, किफायती और स्थिर है।

इस अवसर पर ओएसडी डॉ.

अतुल दौगड़, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजु महता, मंडिया एडवर्डजर डॉ. संतोष अर्वा व एसबीसी कर्मिल अरोड़ा उपस्थित रहे।